भाग दो

जनसंचार माध्यम और हिंदी

1

जनसंचार माध्यम : परिचय

मनुष्य अकेला नहीं रह सकता। वह लोगों और हलचलों के बीच रहना चाहता है। वह स्वयं को व्यक्त करना चाहता है। वह घटनाओं के बारे में जानना चाहता है और स्वयं भी घटनाओं का निर्माता और केंद्र बनना चाहता है।

वस्तुतः शिशु की पहली किलकारी के साथ मानव-समाज की संचार यात्रा आरंभ होती है। संचार के माध्यम से समाज की विविध आयामी अभिव्यक्तियाँ प्रकट होती हैं। जहाँ यह मानव के भावों, विचारों और बहुमुखी सर्जनात्मक गतिविधियों को एक व्यक्ति से लेकर व्यापक जन समूह तक पहुँचाने का कार्य करता है वहीं यह मानव समाज की भौगोलिक दूरियों को पाटता भी है। संचार माध्यम व्यक्ति को व्यक्ति से, व्यक्ति को समूह से, समूह को राष्ट्र से और राष्ट्र को विश्व-समाज से जोड़ते हैं। इस तरह व्यक्ति और विश्व-समाज एक दूसरे की पूरक भूमिका निभाते हैं। धरती पर मनुष्य के कदम रखने के साथ ही इस भूमिका की शुरुआत हुई और आज तक यह चल रही है। जब तक मानव-समाज जीवित रहेगा तब तक मनुष्य की संचार यात्रा चलती रहेगी। इस यात्रा में नए-नए साथी अर्थात संचार के नए-नए माध्यम शामिल होते रहेंगे और पुराने पीछे छूटते रहेंगे। संक्षेप में, संचार विराट भूमिका और अर्थ वाला शब्द है। घटनाओं और विचारों की जानकारी दूसरे तक पहुँचाना संचार है। यही काम जब अधिकतम लोगों के लिए अर्थात पूरे समाज के लिए किया जाता है तो वह जनसंचार कहलाता है। संचार सीधे विकास से जुड़ा है। वह देश के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास में निर्णायक भूमिका निभाता है। असल में समय के बदलाव की

जानकारी देकर सामाजिक परिवर्तन के लिए लोगों को तैयार करना ही संचार का उद्देश्य है। जनसंचार का इतिहास काफ़ी पुराना है।

आरंभिक काल

मनुष्य और संचार के संबंध समाज की विभिन्न विकास अवस्थाओं के अनुसार विकसित होते रहे हैं। अपने आरंभिक काल में मनुष्य ने विभिन्न सांकेतिक माध्यमों से स्वयं को व्यक्त किया। इसके लिए उसने गुफाओं की दीवारों पर चित्रों को उकेरा। इन चित्रों में उसके वन जीवन, शिकार जीवन, कृषि जीवन और सामूहिक जीवन आदि के अनुभवों की गाथा गूँजती है। देश के विभिन्न वन क्षेत्रों में ऐसे गुफा-चित्र मिलते हैं जिनसे यह ज्ञात होता है कि किस प्रकार मानव ने अपनी संचार यात्रा की शुरुआत की थी। गुफा-चित्र यह भी बतलाते हैं कि मानव और उसका समाज किस प्रकार बदलते गए? मनुष्य ने अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कैसे की और किस प्रकार के आविष्कार किए? भोपाल के पास स्थित भीमबेटका के गुफा-चित्रों से इसकी गवाही मिलती है। समाज और उत्पादन के साधनों में विकास के साथ-साथ संचार के माध्यमों में भी परिवर्तन होता रहा। जब मानव शिकार जीवन से कृषि जीवन में पहुँचा तो उसका संचार बोध भी पहले से अधिक समृद्ध होने लगा। अब वह रंग, नृत्य, संगीत और कथाओं के माध्यम से अपने को व्यक्त करने लगा। शब्द और लिपि ने संचार यात्रा को नई दिशा एवं नई गति प्रदान की। अब वह संचार के लिए केवल संकेत भाषा पर निर्भर नहीं था। उसके भाव चित्रकारी, भित्ति चित्र, मूर्तिकला आदि के माध्यम से संचारित होने लगे। इनमें नए-नए रंग और भाव उभरने लगे। अजंता-एलोरा की गुफाओं की चित्रकला, आदिवासी नृत्य-संगीत, प्राचीन स्थापत्य कला आदि के माध्यम से मनुष्य की बदलती संचार क्षमता का पता चलता है। संचार के प्रारंभिक माध्यमों में संगीत को संचार के शक्तिशाली माध्यम के रूप में देखा जाता है। यह माध्यम केवल भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के सभी हिस्सों में पाया जाता है। संगीत के विभिन्न वाद्ययंत्र मनुष्य के विशिष्ट भावों को व्यक्त करते हैं। भारत में संगीत माध्यम की समृद्ध परंपरा रही है। आदिवासी नृत्य-संगीत के

साथ-साथ गैर-आदिवासी नृत्य-संगीत के माध्यम से भारतीय समाज एक दूसरे से जुड़ा रहा है। उदहारण के लिए, कर्नाटक संगीत, हिंदुस्तानी संगीत जैसे माध्यमों ने उत्तर और दक्षिण को जोड़े रखा है। इसी प्रकार भरतनाट्यम्, कुचिपुड़ी, कथक, कथकली, मणिपुरी, ओडिसी, यक्षगान जैसे विविध नृत्यों ने संपूर्ण भारत को भावनात्मक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से एकजुट रखा।

भारतीय समाज में संचार के लोक माध्यम भी निरंतर प्रभावशाली भूमिका निभाते आ रहे हैं। ये माध्यम भारतीयों की निर्मल, कल्पनात्मक और सृजनात्मक मेधा के प्रतीक हैं। इन लोक माध्यमों में लोक कथाओं, लोक नृत्य-संगीत, लोक चित्रकारी, लोक जीवन आदि को शामिल किया जाता है। प्रत्येक क्षेत्र के अपने विशिष्ट लोक माध्यम हैं। उदाहरण के लिए, महाराष्ट्र में ओवी और तमाशा, उत्तर प्रदेश में नौटंकी, छत्तीसगढ़ में पंडवाणी, राजस्थान में फड़, उत्तर भारत में कबीर की साखियों आदि को लोक संचार माध्यमों में रखा जा सकता है। इसी प्रकार रामलीला, हरिकथा, कीर्तन, कव्वाली, पल्ला, विल्लापट्टू लावणी, मांच, भवाई जैसे माध्यम भी लोक संचार के ही रूप हैं। कठपुतली, नाच, स्वाँग, बाइस्कोप, खेल-तमाशा जैसे माध्यमों ने भी लोक संचार का अद्भुत कार्य किया। लोक शिक्षण के क्षेत्र में आज भी इन पारंपरिक माध्यमों का प्रयोग किया जाता है। ग्रामीण समाजों में ये जन-जागरण के सशक्त माध्यम सिद्ध हुए हैं।

शहरी और ग्रामीण समाजों में समान रूप से मनाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय उत्सव भी व्यक्तियों, समूहों, समुदायों और क्षेत्रों के मध्य रचनात्मक और प्रभावशाली संचार माध्यमों की भूमिका निभाते आए हैं। इन उत्सवों में होली, दशहरा, दीवाली, ईद, क्रिसमस, पोंगल, गणेश उत्सव, तीज, गणगौर, सरस्वती पूजा, दुर्गा पूजा, संक्रांति, बैसाखी जैसे राष्ट्रीय और क्षेत्रीय त्योहारों को रखा जा सकता है। इस तरह के तीज-त्योहार जहाँ हमारी धार्मिक-सांस्कृतिक भावनाओं को व्यक्त करते हैं वहीं हमारे कृषि-क्रियाकलापों और ऋतुओं के साथ भी गहरा संबंध रखते हैं। आदिवासी समाज में तो प्रत्येक फसल की बुवाई एवं कटाई का आरंभ स्थानीय पर्व से होता है। भारत जैसे कृषि-प्रधान समाज में संचार के इन पारंपरिक माध्यमों ने जहाँ मनुष्य का मनोरंजन किया,

उसके जीवन को संगीतमय बनाया वहीं उसकी चेतना को गति भी प्रदान की। उसे व्यवस्थित और परस्पर सहयोग आधारित जीवन बिताने की दिशा भी दिखाई। एक प्रकार से सामूहिक जीवन का संदेश दिया।

संचार माध्यमों के आधुनिक रूप

समाज के विकास के साथ-साथ संचार की प्रक्रिया भी जटिल, संगठित, औपचारिक और व्यापक होती चली गई। जहाँ सामंती समाज या राजशाही के युग में संचार के माध्यम सरल, अनौपचारिक और लोकमूल्यों पर आधारित हुआ करते थे, वहीं औद्योगिक युग की शुरुआत के साथ संचार माध्यम जटिल होते चले गए, क्योंकि समाज और शासन प्रणाली भी पेचीदा हो गई। नए आविष्कारों ने संचार माध्यमों में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया। पंद्रहवीं शताब्दी में प्रिंटिंग मशीन के आविष्कार ने मुद्रण माध्यम को जन्म दिया। इसके साथ ही पुस्तकों के मुद्रण और प्रकाशन की शुरुआत हो गई।

संचार माध्यम व्यक्ति और समूह से निकल कर बाज़ार में पहुँच गया। गुटेन बर्ग द्वारा आविष्कृत प्रिंटिंग मशीन के आगमन से पुस्तक प्रकाशन के साथ-साथ अखबार प्रकाशन का सिलसिला भी शुरू हुआ, क्योंकि प्रिंटिंग प्रौद्योगिकी ने संचार माध्यम को नई गति प्रदान की। सत्रहवीं शताब्दी में अखबार अस्तित्व में आया। अखबार के प्रकाशन ने विविध प्रकार की सूचनाओं के आदान-प्रदान को सहज, सुलभ और गति प्रधान बना दिया। उसने जनता के लिए आकांक्षाओं, ज्ञान-विज्ञान, खोज-उद्यम और शासन व्यवस्थाओं के नए-नए द्वार खोल दिए। जनता की कल्पनाशीलता और महत्त्वाकांक्षाओं को पर लगे। वह राजशाही के विकल्प तलाशने लगी। औद्योगिक काल की शुरुआत के साथ प्रेस ने जनता में लोकतंत्र, समानता, स्वतंत्रता और न्याय के बीज बोने आरंभ किए। सारांश यह है कि प्रिंट माध्यम (प्रिंट मीडिया) के उदय ने जनता की दृष्टि को बदल कर रख दिया। समाज के परंपरागत संबंध नए सिरे से गढ़े जाने लगे। अब अखबार जन-जन तक पहुँचने लगा तो नई आर्थिक और राजनीतिक चेतना की धाराएँ फूटने लगीं। समाज में सार्वजनिक सवालों पर बहस का दौर शुरू हुआ। जन विरोधी शासन व्यवस्थाओं को कठघरे में खड़ा किया गया। उन्हें बदला

गया। क्रांतियाँ हुई। इस काम में पुस्तक और अखबार के मुद्रण माध्यम ने क्रांतिकारी भूमिका निभाई।

अब इसमें कोई विवाद नहीं है कि आधुनिक काल में लोकतंत्र को जीवित और जीवंत रखने के लिए जनसंचार की सक्रियता एवं व्यापकता आवश्यक है। संचार के जन माध्यमों से जनता यह जानती है कि उसके द्वारा निर्वाचित जनप्रतिनिधि क्या कर रहे हैं? सरकार की नीतियाँ और योजनाएँ कितनी जनहितवादी हैं और कितनी जनविरोधी? देश की आर्थिक स्थिति कैसी है? किस प्रकार देश-विदेश की घटनाएँ समाज को प्रभावित करती हैं? आधुनिक समाज के सामने कौन सी चुनौतियाँ हैं? इन चुनौतियों का सामना कैसे किया जा रहा है? साफ़ शब्दों में समझा जाए तो आधुनिक जन संचार माध्यमों के अभाव में प्रगति संभव नहीं है। आज प्रत्येक नागरिक और देश आधुनिक संचार माध्यमों से लैस होना चाहते हैं। 'एक नया सूचना समाज' और 'सूचना उच्च मार्ग' संचार क्षितिज पर उभर चुके हैं। घर-घर में सूचना विस्फोट हो चुका है। प्रिंट और इलैक्ट्रॉनिक जन माध्यमों ने व्यक्ति में विश्व नागरिक बनने का स्वप्न अंकुरित कर दिया है।

आधुनिक काल में जनसंचार माध्यमों को निम्न प्रमुख वर्गों में विभाजित किया जा सकता है –

1. **मुद्रण माध्यम (प्रिंट मीडिया)** – इस माध्यम के अंतर्गत मुद्रित पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं और दूसरे प्रकार की जनोपयोगी मुद्रित सामग्री को रखा जा सकता है। मुद्रण माध्यम को जनसंचार माध्यमों के प्रवर्त्तक के रूप में देखा जा सकता है।
2. **प्रसारण माध्यम अर्थात रेडियो** – यह श्रव्य प्रसारण माध्यम है। आज प्रत्येक देश में यह माध्यम उपलब्ध है। भारत में सर्वत्र इसका जाल बिछा हुआ है। प्रसारण माध्यम के आरंभिक रूपों को टेलीफ़ोन, टेलीग्राफ़, चलती-फिरती एवं स्थिर फ़ोटोग्राफी और साउंड रिकार्डिंग के माध्यम से पहचाना जा सकता है। प्रसारण माध्यम से पहले इन माध्यमों की प्रौद्योगिकी अस्तित्व में आ चुकी थी।

3. **चल-चित्र माध्यम अर्थात फिल्म** – फिल्म माध्यम की शुरुआत 19वीं सदी में हुई। इसने समाज को मनोरंजन का नया साधन प्रदान किया। इसके साथ ही इसने जन-जागरण का भी काम किया। इसने दर्शकों का बाज़ार पैदा किया। 'प्रदर्शन व्यापार' की शुरुआत हुई। फिल्म स्टूडियो और सिनेमाघरों का निर्माण हुआ। आज विश्व में फिल्म निर्माण के दो प्रमुख केंद्र हैं– हॉलीवुड (अमरीका) और बॉलीवुड (भारत)।
4. **रिकार्ड संगीत माध्यम** (रिकार्डेड म्यूज़िक) – इस माध्यम ने युवा वर्ग को काफ़ी मोहित किया है। इसका आविष्कार 1880 के आस-पास हुआ था। इस माध्यम के हाथ-पैर हैं – फ़ोनोग्राम, रिकार्ड प्लेयर, ऑडियो कैसेट प्लेयर, कांपेक्ट डिस्क प्लेयर्स, वी.सी.आर. (वीडियो कैसेट रिकार्डर), केबल आदि। आज यह माध्यम विश्वव्यापी उद्योग का रूप ले चुका है।
5. **नव इलैक्ट्रॉनिक माध्यम अर्थात दूरदर्शन** – दूरसंचार और सूचना तंत्र पर आधारित यह माध्यम जनमत और जन छवि को प्रभावित करने में काफी शक्तिशाली सिद्ध हुआ है। इसकी पहचान टेलीविजन के रूप में की जा सकती है। जिस देश के पास यह इलैक्ट्रॉनिक माध्यम नहीं है उसे पिछड़ा हुआ समझा जाता है। भारत में यह माध्यम 'दूरदर्शन' के रूप में प्रसिद्ध है। पहले टेलीविजन माध्यम सरकारी क्षेत्र तक ही सीमित था। लेकिन पिछले कुछ सालों से निजी क्षेत्र के टीवी चैनल भी मैदान में उतर आए हैं। मुख्य बात यह है कि इस माध्यम ने दुनिया को हमारे घरों में समेट दिया है। आप बिस्तर पर लेटे छोटे परदे पर विश्व दर्शन कर सकते हैं और पल-पल की सूचना प्राप्त कर सकते हैं। आज देश के अतिविशिष्ट व्यक्ति से लेकर सामान्य नागरिक तक सब इसकी पकड़ में हैं। यह माध्यम लोगों के बीच अत्यंत लोकप्रिय है।
6. **इंटरनेट** – यह टेलीविजन के बाद का माध्यम है। कई अर्थों में इसे तेज़ रफ़्तारवाला माध्यम माना जाता है। संचार की दुनिया में इसने काफ़ी हलचल पैदा की है। पत्रकारिता के क्षेत्र में यह स्वतंत्र विधा की शक्ल ले रहा है। आज ऑनलाइन पत्रकारिता, साइबर पत्रकारिता, पोर्टल पत्रकारिता

जैसे शब्द मीडिया क्षेत्र में काफ़ी प्रचलित हो गए हैं। विश्व भर की पत्र-पत्रिकाएँ और प्रसिद्ध पुस्तकें इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। लेकिन अभी यह उतना लोकप्रिय नहीं है जितना टेलीविजन और रेडियो है। यह भी इलैक्ट्रॉनिक माध्यम है और कंप्यूटर इसका मुख्य वाहक है।

7. **कनवरजेंस यानी अभिसरण माध्यम**- मीडिया की दुनिया में 'कनवरजेंस मीडिया' शब्द का प्रचलन शुरू हुआ है। इसे आधुनिकतम जनसंचार माध्यम के रूप में देखा जा रहा है। इस माध्यम की विशेषता यह है कि यह कई विविधतापूर्ण माध्यमों का 'पुंज' या 'समायोजन' है। इस माध्यम के सहारे आपके और टेलीविजन के बीच दो तरफा संवाद स्थापित हो सकेगा। आपके कंप्यूटर और मोबाइल फोन में एक साथ कई प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध रहेंगी।

वास्तव में नित नई बदलती हुई प्रौद्योगिकी ने जनसंचार माध्यमों में अनंत संभावनाएँ पैदा कर दी हैं।

प्रश्न-अभ्यास

1. जनसंचार से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।
2. संचार और जनसंचार का अंतर स्पष्ट कीजिए।
3. जनसंचार के प्राचीन साधन कौन-कौन से थे?
4. आधुनिक काल के जनसंचार माध्यमों का परिचय दीजिए।
5. जनसंचार के नए इलैक्ट्रॉनिक माध्यम बताइए।
6. इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों में से कौन से माध्यम अधिक लोकप्रिय हैं और क्यों?
7. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए –
   - ❑ मुद्रण
   - ❑ रेडियो
   - ❑ चलचित्र (फ़िल्म)
   - ❑ इंटरनेट